



ग्रामीण बालिका शिक्षा में सामाजिक-आर्थिक बाधाएँ

¹Savita Saxena and ²Dr. Sonia Garg

¹Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur, Madhya Pradesh, India

²Assistant Professor, Shri Krishna University, Chhatarpur, Madhya Pradesh, India

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.19367465>

Corresponding Author: Savita Saxena

सारांश

यह अध्ययन ग्रामीण क्षेत्रों में बालिकाओं की शिक्षा में आने वाली सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक बाधाओं का विश्लेषण करता है। शिक्षा किसी भी समाज के विकास का महत्वपूर्ण आधार है, किन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में बालिकाएँ अभी भी अनेक समस्याओं का सामना करती हैं। इस शोध का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण समाज में बालिकाओं की शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारकों, अभिभावकों के दृष्टिकोण तथा सामाजिक मान्यताओं को समझना है। अध्ययन के लिए बीड जिले के अंबाजोगाई ब्लॉक के 40 गाँवों का चयन किया गया और प्रत्येक गाँव से 10 स्कूली बालिकाओं का चयन कर कुल 400 उत्तरदाताओं से डेटा एकत्र किया गया। शोध में गुणात्मक तथा मात्रात्मक दोनों विधियों का उपयोग किया गया तथा प्राथमिक डेटा संरचित साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से प्राप्त किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से पता चलता है कि गरीबी, सामाजिक मानदंड, असुरक्षा की भावना, लंबी दूरी पर स्थित विद्यालय, प्रारंभिक विवाह तथा लैंगिक पूर्वाग्रह बालिकाओं की शिक्षा में प्रमुख बाधाएँ हैं। इसके अतिरिक्त कई अभिभावक सामाजिक दबाव तथा सांस्कृतिक मान्यताओं के कारण अपनी बेटियों को उच्च शिक्षा के लिए गाँव से बाहर भेजने में संकोच करते हैं। शोध से यह स्पष्ट होता है कि बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए सामाजिक जागरूकता, आर्थिक सहायता तथा सकारात्मक अभिभावकीय दृष्टिकोण अत्यंत आवश्यक हैं।

मूल शब्द: बालिका शिक्षा, सामाजिक-आर्थिक बाधाएँ, ग्रामीण समाज

1. प्रस्तावना

शिक्षा व्यक्ति के विश्लेषणात्मक दिमाग और तर्क क्षमता के विकास में योगदान देती है, जो आत्मविश्वास, आत्मसम्मान और आत्म-सम्मान के निर्माण में सहायक होती है। आज के समाज में, एक अशिक्षित बच्चा आय, स्वास्थ्य और अवसर के मामले में वंचित है। आने वाले वर्षों में, एक समाज जो अपने बच्चों को शिक्षित करने में विफल रहेगा, वह आर्थिक उत्पादकता और सामाजिक कल्याण के मामले में विकलांग हो जाएगा। मातृ एवं शिशु कल्याण के विकास के लिए महिला शिक्षा के महत्वपूर्ण निहितार्थ हैं। लड़कियों की शिक्षा मातृ और शिशु मृत्यु दर को कम करती है और प्रजनन क्षमता को कम करती है। शिक्षा को राष्ट्रीय आर्थिक विकास,

आत्मनिर्भरता और लोगों के सांस्कृतिक पुनर्जागरण में एक प्रमुख योगदानकर्ता के रूप में देखा जाता है। शिक्षा एक मौलिक मानव अधिकार है जिसे सभी को उम्र, लिंग, जातीयता, जनजाति या सामाजिक-आर्थिक स्थिति की परवाह किए बिना प्राप्त करना चाहिए। शिक्षा में लिंग असमानताएं, विशेष रूप से पहुंच और प्राप्ति में भारत में बालिका शिक्षा की चुनौतियाँ बहुआयामी हैं और सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों में गहराई से निहित हैं। गरीबी एक महत्वपूर्ण बाधा बनी हुई है, क्योंकि सीमित वित्तीय संसाधनों वाले परिवार अक्सर लड़कियों की तुलना में लड़कों की शिक्षा को प्राथमिकता देते हैं। लड़कियों से अक्सर घर के कामों और देखभाल की ज़िम्मेदारियों में

योगदान देने की अपेक्षा की जाती है, जिससे उनका शैक्षणिक गतिविधियों के लिए समय और ऊर्जा सीमित हो जाती है। इसके अतिरिक्त, सांस्कृतिक मानदंड और प्रथाएँ, जैसे कि कम उम्र में शादी, लड़कियों की शिक्षा प्राप्त में और बाधा डालती हैं। यूनिसेफ (2020) की रिपोर्ट है कि भारत में 27% लड़कियों की शादी 18 वर्ष की आयु से पहले हो जाती है, जिससे उनकी आगे की शिक्षा के अवसर गंभीर रूप से कम हो जाते हैं। शैक्षिक अवसर और उन्हें अपनी पूरी क्षमता तक पहुँचने से रोकते हैं।

ये बाधाएँ सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारकों के बीच जटिल अंतःक्रियाओं के परिणामस्वरूप उत्पन्न होती हैं, जिसके परिणामस्वरूप असमानता का एक घातक चक्र बनता है जो सामाजिक-आर्थिक विकास को बाधित करता है। पूरे इतिहास में, लिंग मानदंडों और सांस्कृतिक प्रथाओं ने पारंपरिक लिंग भूमिकाओं को मजबूत किया है, महिलाओं और लड़कियों को मुख्य रूप से घरेलू जिम्मेदारियाँ सौंपी हैं और उनकी बौद्धिक क्षमता को कम करके आंका है। सामाजिक अपेक्षाएँ और भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण अक्सर परिवारों को अपनी बेटियों की शिक्षा में निवेश करने से हतोत्साहित करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप महिलाओं में कम नामांकन और उच्च ड्रॉपआउट दर होती है। कम उम्र में विवाह, किशोरावस्था में गर्भधारण और हानिकारक लिंग रूढ़िवादिता स्थिति को और खराब करती है, जिससे गरीबी और असमानता का चक्र चलता रहता है। यह अध्ययन महिला शिक्षा में बाधाओं की जांच करना चाहता है।

एक बच्चे की शिक्षा घर पर उसकी माँ से शुरू होती है। इस संदर्भ में, गांधीजी ने जो कहा वह सच था। क्योंकि, उन्होंने कहा, "यदि आप एक आदमी को शिक्षित करते हैं, तो आप एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं, लेकिन यदि आप एक महिला को शिक्षित करते हैं, तो आप एक महिला को शिक्षित कर सकते हैं, आप एक पूरे परिवार को शिक्षित कर सकते हैं।" हमारे देश में अधिकांश लोग महिलाओं के अधिकारों के बारे में नहीं जानते हैं और इसलिए वे अभी भी लड़कियों को लड़कों से कमतर समझते हैं। हमें अपनी मातृभूमि के रूप में भारत पर गर्व है। हम नदियों का नाम महिलाओं के नाम पर रखने में प्रसन्न हैं। अपनी माँ के गर्भ में गर्भ धारण करने के बाद, उसके द्वारा इस दुनिया में जन्म लेने के बाद, उसके द्वारा पाले जाने के बाद, उसके द्वारा दूध पीने के बाद, दुख और खतरों के समय उसकी रक्षा करने के बाद, हर समय उसके द्वारा प्यार किए जाने के बाद, हम बड़े होने पर उसे अनदेखा कर देते हैं।

हम उसके जैसी अन्य महिलाओं को अपनी वस्तु के रूप में देखते हैं। "साक्षरता मानव प्रगति के लिए महत्वपूर्ण है। सभी सहमत हैं कि विकास और गरीबी उन्मूलन की सबसे महत्वपूर्ण कुंजी शिक्षा है। वयस्क शिक्षा, साक्षरता और आजीवन सीखने को इस मौलिक मान्यता के साथ जोड़ा जाना चाहिए कि महिलाओं और लड़कियों की शिक्षा विकास के लिए केंद्रीय है।

2. साहित्य समीक्षा

असदुल्लाह, एमडी एट अल. (2022) ^[1]. महिलाओं की शिक्षा का सामाजिक प्रभाव बहुत महत्वपूर्ण है। प्रजनन दर, शिशु मृत्यु दर और मातृ मृत्यु दर में कमी, सामाजिक-आर्थिक लाभों में से कुछ ही हैं। शिक्षा के क्षेत्र में लैंगिक असमानता को कम करना लैंगिक समानता को बढ़ावा देता है और यह सभी लिंगों के लोगों के लिए समान अधिकार और अवसर सुनिश्चित करने के लिए कक्षा के अंदर और बाहर दोनों जगह महत्वपूर्ण है। किसी क्षेत्र में शिक्षित महिलाओं की संख्या में वृद्धि अर्थव्यवस्था के विकास जैसे उच्च स्तर के विकास से जुड़ी हुई है। महिलाओं की शिक्षा से उनके वेतन में वृद्धि होती है, जिससे अर्थव्यवस्था को फलने-फूलने में मदद मिलती है। महिलाओं की शिक्षा से महिला सशक्तिकरण होता है। साक्षरता की यह कम दर महिलाओं के जीवन, साथ ही उनके परिवारों और देश की आर्थिक प्रगति पर बहुत बड़ा प्रभाव डालती है। कई अध्ययनों के अनुसार, निरक्षर महिलाओं में प्रजनन और मृत्यु दर का जोखिम अधिक होता है, साथ ही उनका पोषण स्तर कम होता है, आर्थिक क्षमता सीमित होती है और घर में स्वायत्तता सीमित होती है।

यारेप, वैपसन. (2024) ^[2]. गुणात्मक शोध पद्धति को नियोजित करने और एक-से-एक साक्षात्कार और केंद्रित समूह चर्चाओं सहित गुणात्मक उपकरणों का उपयोग करके, 14 प्रतिभागियों से डेटा एकत्र किया गया, जिसमें महिला छात्र, ड्रॉपआउट, माता-पिता, शिक्षक और सामुदायिक नेता शामिल थे। निष्कर्ष बताते हैं कि सांस्कृतिक मानदंड और लैंगिक भूमिकाएँ नेम्बी पठार में लड़कियों के जीवन और शिक्षा पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती हैं। इन सांस्कृतिक मानदंडों और लैंगिक भूमिकाओं ने स्कूलों, राजनीति और नेतृत्व की भागीदारी, निर्णय लेने आदि पर अपना प्रभाव बढ़ाया। लड़कियों द्वारा अनुभव किए गए देखे गए प्रभाव और चुनौतियाँ इन सांस्कृतिक मानदंडों और लैंगिक भूमिकाओं में गहराई से निहित हैं। नतीजतन, सांस्कृतिक मानदंडों, लैंगिक भूमिकाओं और धार्मिक मान्यताओं का

संयोजन एक जटिल ढांचा बनाता है जो नेम्बी पठार में लड़कियों के अनुभवों और अवसरों को आकार देता है। संघर्ष, प्रतिभागियों की उपलब्धता और निरंतर मौतों जैसी सीमाओं का सामना करने के बावजूद, अध्ययन ने लड़कियों की शिक्षा में महत्वपूर्ण बाधाओं का पता लगाया जो नेम्बी पठार की महिला आबादी को बहुत प्रभावित करती हैं। ये निष्कर्ष शैक्षिक समानता को बढ़ावा देने और क्षेत्र में महिलाओं और लड़कियों को सशक्त बनाने के उद्देश्य से हस्तक्षेप की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करते हैं।

अहमद, नवीद एट अल. (2021) [3]. इस शोध का उद्देश्य उच्च शिक्षा में महिलाओं के सामने आने वाली विभिन्न बाधाओं की पहचान करना था। उच्च शिक्षा में महिलाओं के सामने आने वाली मुख्य समस्या उस संस्कृति की परंपरा है। शिक्षा महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार करती है और उन्हें जीवन में जागरूकता प्रदान करती है। शोध के लिए तहसील तौसा शरीफ को चुना गया। इस शोध की लक्षित आबादी तहसील तौसा शरीफ की सभी महिलाएं थीं। इस शोध का नमूना आकार तौसा शरीफ के 100 परिवार थे। शोधकर्ता ने सरल यादृच्छिक नमूनाकरण की मदद से उत्तरदाताओं का चयन किया था। पूरे देश में संस्कृतियों और परंपराओं में विविधता के कारण पाकिस्तानी समाज में जटिल गतिशीलता है। शोध साक्ष्य के निष्कर्ष बताते हैं कि विभिन्न पहलों के प्रभाव में सभी के लिए शिक्षा सुलभ बनाने में कुछ सकारात्मक बदलाव और प्रगति हुई है। कीवर्ड: उच्च शिक्षा, परंपराएँ, आदिवासी समाज, आय

सरदार, सैफुल्ला आदि। (2024) [4]. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 का उद्देश्य भारत की शिक्षा प्रणाली में सुधार करना है, जिसमें समावेशिता पर ध्यान केंद्रित किया गया है, विशेष रूप से महिलाओं के लिए, जो अध्ययन करने के लिए काफी सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक बाधाओं का सामना करती हैं। यह अध्ययन एनईपी 2020 के तहत महिलाओं की शिक्षा के लिए कठिनाइयों और संभावनाओं को देखता है। प्रमुख चुनौतियों में निरंतर लैंगिक पूर्वाग्रह, बुनियादी ढांचे की कमी और विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल संसाधनों तक सीमित पहुंच शामिल है। हालांकि, रणनीति लचीले शिक्षण दृष्टिकोण, विस्तारित व्यावसायिक प्रशिक्षण, डिजिटल साक्षरता पहल और ड्रॉपआउट दरों को कम करने के प्रयासों पर जोर देकर अवसर पैदा करती है। इस अध्ययन में वर्णनात्मक और गुणात्मक दोनों शोध दृष्टिकोणों का उपयोग किया गया। इस अध्ययन में उपयोग किए गए माध्यमिक स्रोतों में

पुस्तकें, ई-पुस्तकें, पत्रिकाएँ, लेख, वेबसाइट, रिपोर्ट आदि शामिल थे।

मुस्तफा, सदाफ एट अल. (2019) [9]. दुनिया में, कई विकासशील देश लगातार अपनी आर्थिक वृद्धि में सुधार करने की कोशिश कर रहे हैं। आर्थिक विकास देश में विभिन्न शैक्षिक स्तर पर प्रदान की जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। लिंग पर विचार किए बिना, दोनों के लिए समान मानक की शिक्षा प्रदान करना महत्वपूर्ण है। कई विकसित देशों में। विभिन्न लिंगों के साथ समान व्यवहार किया जाता है। शिक्षा दोनों लिंगों के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। लेकिन पाकिस्तान में, महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। महिलाओं की शिक्षा समग्र सामाजिक-सांस्कृतिक और मानव पूंजी के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और देश में आर्थिक समृद्धि भी लाती है। इस शोध पत्र में, लेखकों ने शिक्षा में महिलाओं के सामने आने वाली विभिन्न बाधाओं की जांच की है। 125 का नमूना आकार लिया गया था जबकि 113 उत्तरदाता थे। परिकल्पना की जांच करने के लिए, आश्रित और स्वतंत्र चर के बीच संबंध निर्धारित करने के लिए सर्वेक्षण आधारित वर्णनात्मक विश्लेषण तकनीक का उपयोग किया गया था।

3. अनुसंधान क्रियाविधि

प्रस्तुत शोध कार्य सामाजिक कार्य शोध है तथा इसमें दो प्रकार के शोध होते हैं गुणात्मक तथा मात्रात्मक। इस अध्ययन में शोधकर्ता ने अधिक स्पष्ट निष्कर्षों के लिए गुणात्मक तथा मात्रात्मक दोनों विधियों का उपयोग किया है।

डिजाइन:- शोध डिजाइन का अर्थ है शोध के उद्देश्य को प्राप्त करने की व्यवस्था और योजना बनाना। उद्देश्यों के अनुसार, प्रस्तुत अध्ययन ग्रामीण बालिकाओं की शिक्षा में आने वाली बाधाओं, अभिभावकों के दृष्टिकोण और लिंग पूर्वाग्रह को स्पष्ट करता है, इसलिए शोध कार्य के लिए अन्वेषणात्मक शोध डिजाइन का उपयोग किया जाता है।

ब्रह्मांड:- शोधकर्ता ने बीड जिले में स्थित अंबाजोगाई ब्लॉक से गांवों का चयन किया है। 2011 की जनगणना के अनुसार, अंबाजोगाई ब्लॉक की 73.12% (2,72,088) आबादी ग्रामीण इलाकों में रहती है। शोधकर्ता ने अंबाजोगाई ब्लॉक से 40 गांवों का चयन किया है, और प्रत्येक गांव से 10 स्कूली लड़कियों का चयन किया है। लड़कियों की उम्र

13 से 22 वर्ष के बीच है और वे अपनी शिक्षा जारी रख रही हैं।

नमूनाकरण: नमूना एक बड़ी आबादी से लिए गए लोगों का एक हिस्सा है (आहूजा, 2010, 155)। वर्तमान शोध कार्य के लिए, शोधकर्ता ने उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण का उपयोग किया, यह गैर-संभाव्यता नमूनाकरण विधि के अंतर्गत आता है। अंबाजोगाई ब्लॉक के प्रत्येक 40 गांवों से 10 उत्तरदाता। इसलिए, शोधकर्ता ने 7वीं कक्षा से लेकर स्नातक स्तर की पढ़ाई करने वाली लड़कियों का चयन किया, जो अपनी शिक्षा जारी रखती हैं और साक्षात्कार का जवाब देने में सक्षम हैं। लड़कियों के माता-पिता भी साक्षात्कार का जवाब देते हैं।

नमूने का आकार: प्रत्येक गांव से उत्तरदाताओं का नमूना आकार 10 है। बीड जिले के अंबाजोगाई ब्लॉक के 40 गांवों से डेटा एकत्र किया गया। इसका मतलब है (10 x 40 = 400) कुल नमूना आकार 400 है।

3.1 डेटा संग्रहण की विधि

डेटा संग्रह दो प्रकार के होते हैं। प्राथमिक डेटा संग्रह और द्वितीयक डेटा संग्रह। इसलिए, वर्तमान अध्ययन में शोधकर्ता ने प्राथमिक और द्वितीयक दोनों डेटा संग्रह विधियों का उपयोग किया है।

3.2 प्राथमिक डेटा संग्रहण के उपकरण

मात्रात्मक डेटा साक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त किया गया है और उस साक्षात्कार तकनीक के लिए शोधकर्ता ने संरचित साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया है।

4. डेटा विश्लेषण

पिछले अध्याय में शोधकर्ता ने शोध कार्य की कार्यप्रणाली पर चर्चा की थी। उल्लिखित प्राथमिक डेटा संग्रह विधि के अनुसार, संरचित साक्षात्कार के माध्यम से चयनित क्षेत्रों से व्यवस्थित रूप से डेटा एकत्र किया गया है।

4.1 अभिभावक उत्तरदाता

इस शोध कार्य के मुख्य बिंदुओं में से एक है अभिभावक उत्तरदाता। लड़कियों की शिक्षा में अभिभावकों का दृष्टिकोण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए, इस संबंध में एकत्रित डेटा अभिभावकों की पृष्ठभूमि, स्थिति और मानसिकता को दर्शाता है। आयु शोध कार्य का एक

महत्वपूर्ण घटक है। यह उत्तरदाता की क्षमता, मनोविज्ञान, किसी विशेष अवधारणा से संबंधित स्वीकृति को समझने के लिए उपयोगी है।

तालिका 1: अभिभावक उत्तरदाताओं का आयु-वार वितरण

क्रमांक	उम्र साल)	आवृत्ति	%
1	18-28	2.8	0.7
2	29-38	298	74.7
3	39-48	97.2	24.3
4	49-58	8	2.0
	कुल	400	100.0

तालिका 1 माता-पिता उत्तरदाताओं का आयु-वार वितरण उत्तरदाताओं की विशेष आयु को दर्शाता है। यह माता-पिता की संख्या, आयु समूह के अनुसार उनकी आवृत्ति और प्रतिशत को भी स्पष्ट करता है। अधिकांश माता-पिता 29 से 38 वर्ष की आयु वर्ग में हैं। (0.7%) उत्तरदाता 18-28 वर्ष की आयु वर्ग के हैं, जबकि (74.7%) उत्तरदाता 29-38 वर्ष की आयु वर्ग के हैं, (23%) उत्तरदाता 39-48 वर्ष की आयु वर्ग के हैं और (2%) उत्तरदाता 49-58 वर्ष की आयु वर्ग के हैं। इसमें निष्कर्ष निकाला गया है कि अधिकांश माता-पिता कम उम्र के हैं। इसलिए, वे विभिन्न तरीकों से पैसे कमा सकते हैं और अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा दे सकते हैं, तथा उनके लिए स्वस्थ वातावरण बना सकते हैं। सामाजिक विकास पर उनके प्रभाव को समझने के लिए सामाजिक गतिविधियों में लिंग एक आवश्यक तत्व है। इस अध्ययन में, शोधकर्ता उत्तरदाता की रुचि की पहचान करने में मदद करता है और यह समझना चाहता है कि लिंग चर्चा में उत्तरदाता की रुचि और भागीदारी में कैसे अंतर लाता है।

4.2 लड़कियों की शिक्षा पर सामाजिक बाधाओं का प्रभाव

अरस्तू के अनुसार, "मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है"। व्यक्ति एक साथ नहीं रह सकता। वे हमेशा समस्याओं को साझा करने, रिश्ते बनाने और एक-दूसरे की जरूरतों को पूरा करने के लिए एक साथ रहना पसंद करते हैं। इसलिए, सामाजिक दृष्टिकोण हमेशा उन लोगों पर प्रभाव डालता है जो समूह में रहते हैं।

तालिका 2: लड़कियों की सतत शिक्षा पर सामाजिक बाधाओं का प्रभाव

क्रमांक	विशिष्ट	आवृत्ति	%
1	हाँ	264	66
2	नहीं	136	34
	कुल	400	100.0

उपरोक्त तालिका संख्या 2 में लड़कियों की शिक्षा जारी रखने पर सामाजिक बाधाओं के प्रभाव को दर्शाया गया है, (66%) अभिभावकों ने बताया कि लड़कियों की शिक्षा जारी रखने पर सामाजिक बाधाओं का प्रभाव पड़ता है जबकि (34%) अभिभावकों का जवाब था कि लड़कियों की शिक्षा जारी रखने पर सामाजिक समस्याओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। इसमें यह बात सामने आई कि, अधिकांश माता-पिता इस बात पर सहमत थे कि लड़कियों की शिक्षा सामाजिक बाधाओं, सामाजिक मानदंडों, सामाजिक समर्थन जैसी सामाजिक समस्याओं से प्रभावित होती है, जो समाज या समुदाय द्वारा बनाई जाती हैं।

4.3 आर्थिक अस्थिरता का लड़कियों की शिक्षा पर प्रभाव

परिवारों की आर्थिक स्थिति उनके दैनिक क्रियाकलापों, बच्चों के विकास में समस्याएँ पैदा करती है। खराब आर्थिक स्थिति स्वास्थ्य, शिक्षा और नैतिक विकास पर प्रभाव डाल सकती है। इस तालिका में शोधकर्ता यह दर्शाना चाहते हैं कि आर्थिक अस्थिरता के बारे में माता-पिता के विचार भी लड़कियों की शिक्षा जारी रखने में बाधाएँ पैदा करते हैं।

तालिका 3: आर्थिक अस्थिरता का लड़कियों की शिक्षा पर प्रभाव

क्रमांक	विशिष्ट	आवृत्ति	को PERCENTAGE
1	हाँ	279	69.7
2	नहीं	121	30.3
	कुल	400	100.0

उपरोक्त तालिका संख्या 3 लड़कियों की शिक्षा पर आर्थिक अस्थिरता का प्रभाव दर्शाती है कि (69.7%) अभिभावकों ने लड़कियों की शिक्षा पर आर्थिक अस्थिरता के प्रभाव के बारे में प्रतिक्रिया दी, जबकि (30.3%) अभिभावकों ने जवाब दिया कि लड़कियों की शिक्षा पर आर्थिक अस्थिरता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। इसमें बताया गया है कि अधिकांश माता-पिता इस बात से सहमत हैं कि खराब आर्थिक स्थिति का लड़कियों की शिक्षा पर प्रभाव पड़ता है। सामाजिक समूहों द्वारा व्यक्ति और व्यक्तियों के समूहों में अंतर और विविधताओं को स्वीकार करने की क्षमता को आमतौर पर सामाजिक स्वीकृति कहा जाता है और सामाजिक स्वीकृति का अर्थ है समाज द्वारा किसी व्यक्ति या व्यवहार, परिवर्तन लक्षणों जैसी किसी चीज़ की सकारात्मक स्वीकृति। जबकि सामाजिक स्वीकृति सामाजिक परिवर्तन के लिए समाज की आवश्यकता है। इसलिए, शोधकर्ता लड़कियों की शिक्षा के प्रति समाज के दृष्टिकोण और स्वीकृति को

जानना चाहता है। इससे पता चला कि अधिकांश ग्रामीण अपनी लड़कियों को आगे की शिक्षा के लिए गांव से बाहर भेजने के लिए सहमत नहीं हैं। इसमें पाया गया कि अभिभावक उत्तरदाताओं को लड़कियों की शिक्षा के विकास से संबंधित सामाजिक परिवर्तन को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं।

4.4 प्रतिबंधों के कारण

प्रतिबंध का मतलब है सीमाएँ। किसी को किसी कारण से नियंत्रित करना। भारत में लड़कियों पर घर और समाज में भी ज्यादा प्रतिबंध हैं। ऐसी बहुत सी सामान्य चीज़ें हैं जो पुरुषों के लिए आसान हैं लेकिन महिलाओं के लिए मुश्किल। ये प्रतिबंध लड़कियों के विकास को सीमित करते हैं। इसलिए, शोधकर्ता यह जानना चाहता है कि कौन से कारण लड़कियों की प्रगति को प्रभावित कर रहे हैं।

तालिका 4: प्रतिबंधों के कारण

क्रमांक	कारण	आवृत्ति	को Percentage
1	असुरक्षा+ आर्थिक समस्या+ लंबी दूरी	17	4.3
2	असुरक्षा	31	7.7
3	शादी में कठिनाइयाँ + प्रेम सम्बन्धी मामले + किशोरावस्था	32	8.0
4	बढ़ती उम्र+शादी में मुश्किलें+प्यार के मामले+किशोरावस्था	97	24.3
5	असुरक्षा + सामाजिक दबाव	19	4.7
6	असुरक्षा+ प्रेम मायने रखता है	1	.3
7	असुरक्षा+ प्रेम मायने रखता है+ किशोरावस्था	24	6.0
8	पैसे की बर्बादी	1	.3
9	बढ़ती उम्र	3	.7
10	सामाजिक दबाव	4	1.0
11	उपरोक्त सभी	25	6.3
12	जवाब नहीं दिया गया	153	38.3
	कुल	400	100.0

तालिका क्रमांक 4 में प्रतिबंधों के कारण बताए गए हैं कि (24.3%) ग्रामीणों का मानना है कि बढ़ती उम्र, विवाह, प्रेम संबंधों और किशोरावस्था में कठिनाइयों के कारण प्रतिबंध लगते हैं; (8%) का मानना है कि विवाह, प्रेम संबंधों, किशोरावस्था में कठिनाइयों के कारण प्रतिबंध लगते हैं; (7.7%) ग्रामीणों का मानना है कि असुरक्षा के कारण

प्रतिबंध लगते हैं; (6.3%) ने कहा कि सभी कारणों से; (6%) ग्रामीणों का मानना है कि लड़कियों की असुरक्षा, प्रेम संबंध और किशोरावस्था; (4.3%) ग्रामीणों का मानना है कि असुरक्षा, आर्थिक समस्या और लंबी दूरी; कुछ ग्रामीणों का मानना है कि लड़कियों की शिक्षा पर पैसा खर्च करना बर्बादी है।

इसमें बताया गया है कि किशोरावस्था, प्रेम संबंध, विवाह में कठिनाइयां, लड़कियों की बढ़ती उम्र और असुरक्षा इन विभिन्न कारणों से ग्रामीण लड़कियों की शिक्षा को सकारात्मक प्राथमिकता नहीं दे रहे हैं, जिससे वे शिक्षा के लिए गांव से बाहर जाने को मजबूर हैं। निर्णय एक ऐसी प्रक्रिया है जो कठिनाइयों को हल करने के लिए कुछ निर्धारित करती है। इसे विभिन्न विकल्पों में से भविष्य के लिए सही विकल्प चुनने की क्षमता के रूप में भी परिभाषित किया जाता है। यहाँ शोधकर्ता लड़कियों की निर्णय लेने की क्षमता और उनके भविष्य के निर्णयों में उनकी भागीदारी जानना चाहता है और कितने माता-पिता अपनी बेटियों को उनके स्वयं के निर्णय लेने में मदद करते हैं?

उपरोक्त जानकारी से ऐसा प्रतीत होता है कि अधिकांश निर्णय लड़कियों के माता-पिता ही ले रहे हैं। अधिकांश लड़कियाँ निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल नहीं होती हैं और माता-पिता भी उन्हें प्रोत्साहित नहीं करते हैं, जबकि कुछ परिवारों में माता और पिता दोनों ही अपनी लड़कियों को शिक्षा से संबंधित निर्णय लेने में शामिल कर रहे हैं। इसमें पाया गया कि माता-पिता अपनी बेटियों को अपने जीवन के निर्णयों में शामिल नहीं करते। इसलिए, बेटियाँ स्वयं का निर्णय लेने में सक्षम नहीं हैं और अपने जीवन से संबंधित निर्णय नहीं ले पाती हैं।

5. निष्कर्ष

इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में बालिकाओं की शिक्षा कई सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों से प्रभावित होती है। अधिकांश अभिभावकों ने स्वीकार किया कि सामाजिक मानदंड, आर्थिक अस्थिरता, असुरक्षा की भावना और प्रारंभिक विवाह जैसी समस्याएँ बालिकाओं की शिक्षा को प्रभावित करती हैं। अध्ययन के आंकड़ों से यह भी पता चलता है कि कई परिवारों में अभी भी लैंगिक पूर्वाग्रह मौजूद है, जिसके कारण लड़कों की शिक्षा को लड़कियों की तुलना में अधिक प्राथमिकता दी जाती है। इसके अतिरिक्त विद्यालयों की दूरी, परिवहन की कमी और सामाजिक दबाव भी बालिकाओं की शिक्षा जारी रखने में बाधा बनते हैं। कई अभिभावक

अपनी बेटियों को उच्च शिक्षा के लिए गाँव से बाहर भेजने में असहज महसूस करते हैं, जिससे उनके शैक्षिक अवसर सीमित हो जाते हैं। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि अधिकांश निर्णय माता-पिता द्वारा लिए जाते हैं और लड़कियों को अपने जीवन से संबंधित निर्णयों में कम भागीदारी मिलती है। इसलिए आवश्यक है कि समाज में बालिका शिक्षा के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाई जाए और परिवारों को सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित किया जाए। सरकार और समाज को मिलकर ऐसी नीतियाँ और कार्यक्रम लागू करने चाहिए जो बालिकाओं को सुरक्षित, सुलभ और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करें। इससे न केवल बालिकाओं का सशक्तिकरण होगा बल्कि समाज और देश के समग्र विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा।

6. संदर्भ

1. असदुल्लाह मोहम्मद दिदार, यास्मिन मीनारा. भारत में महिला शिक्षा का सामाजिक-आर्थिक प्रभाव. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च पब्लिकेशन एंड रिव्यूज. 2022;3(2):785-788. doi:10.55248/gengpi.2022.3.2.9.
2. यारेप वैपसन. नेम्बी पठार एलएलजी, निपा-कुतुबु, दक्षिणी हाइलैंड्स प्रांत में महिला छात्रों की शिक्षा पर सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों का प्रभाव. 2024;1:1-42.
3. अहमद नवीद, इकबाल खालिद, यासिर सिबतैन, नदीम मुहम्मद. महिलाओं की उच्च शिक्षा में सामाजिक-आर्थिक बाधाएँ: आदिवासी क्षेत्र बरथी का एक अध्ययन. आईयूबी जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज. 2021;3(2). doi:10.52461/ijoss.v3i2.827.
4. सरदार सैफुल्ला, पारिया मणिकांता. एनईपी 2020 के संदर्भ में महिला शिक्षा की चुनौतियाँ और अवसर. ह्यूमैनिटी साइंस एंड इंग्लिश लैंग्वेज के लिए स्कॉलरली रिसर्च जर्नल. 2024;12:136-150.
5. मुस्तफा सदाफ, खान मोहम्मद. महिलाओं के लिए शैक्षिक बाधाएँ: कराची का एक केस स्टडी. पाकिस्तान जर्नल ऑफ जेंडर स्टडीज. 2019;17(1):165-184. doi:10.46568/pjgs.v17i1.15.
6. अबेदी फरहान, देवी भारती. महिलाओं का शैक्षिक बहिष्कार: चुनौतियाँ और अवसर. 2021.
7. सरकार रिपन, रेजा एम, हुसैन मोहम्मद दिदार. लड़कियों की शैक्षिक प्राप्ति में सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाएँ: ग्रामीण बांग्लादेश के अनुभव. 2014;10:349-358. doi:10.5281/zenodo.6789192.

8. साहू संजुक्ता. भारत में लड़कियों की शिक्षा: स्थिति और चुनौतियाँ. 2016;6:130-141.
9. कुमार राजेश. हाथरस जिले, उत्तर प्रदेश में शिक्षा के लिए सामाजिक-आर्थिक बाधाएँ: चुनौतियाँ और समाधान. जर्नल ऑफ ईस्ट-वेस्ट बिज़नेस. 2024.
10. शेख मुहम्मद, हुसैन जाहिद, देहराज महबूब. स्टेम शिक्षा: खैरपुर (पाकिस्तान) की महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक बाधाएँ. वैश्विक क्षेत्रीय समीक्षा. 2019;4(2):392-403. doi:10.31703/grr.2019(IV-II).42.
11. पुचा चित्तिबाबू, इलामादुरथी (डॉ.), मत्सानिया वीरेंद्र, कोये जॉन. भारत में उच्च शिक्षा तक पहुँचने में महिलाओं की चुनौतियाँ. नामीबियाई अध्ययन जर्नल: इतिहास, राजनीति, संस्कृति. 2023;33. doi:10.59670/jns.v33i.4305.
12. एडोमाको ग्यासी प्रिसिला, झोउ लुलिन, अमर्टेइफियो एडविना. घाना के ग्रेटर अकरा क्षेत्र के आशामन नगरपालिका में बालिका शिक्षा के सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक निर्धारक. कॉर्जेंट सोशल साइंसेज. 2023;9:2275431. doi:10.1080/23311886.2023.2275431.
13. रशीद जीशान, हुसैन बाबर, शहजाद कैसर, खान फरीदून. पाकिस्तान में महिला शिक्षा में सामाजिक-आर्थिक बाधाओं की भूमिका: एक बाइनरी आउटकम दृष्टिकोण. 2021;7:447. doi:10.5281/zenodo.4991675.
14. अशरफ इमरान, अली आसिफ. पाकिस्तान में सामाजिक-आर्थिक कल्याण और महिलाओं की स्थिति: एक अनुभवजन्य विश्लेषण. एमपीआरए पेपर. 2018;88972.
15. कौर सुखप्रीत. ग्रामीण महिलाओं का शैक्षिक सशक्तिकरण: पंजाब गांव का एक अध्ययन. शैक्षिक खोज: शिक्षा और अनुप्रयुक्त सामाजिक विज्ञान का एक अंतर्राष्ट्रीय जर्नल. 2017;8(1):95-101.

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.